शादी (ब्याह) के विषय में महत्त्वपूर्ण सन्देश

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

शादी (ब्याह) के विषय में महत्त्वपूर्ण सन्देश

हर मनुष्य जिसके पास शादी (ब्याह) करने की क्षमता हो, उसे शादी करना चाहिए| जिस तरह शादी करना सुन्नत (दैवदूत मुहम्मद ﷺ के अनुचरण के प्रकार) है, उसी तरह सुन्नत के प्रकार शादी की जानी चाहिए| शादी के पश्चात पति पत्नी एक दूसरे के दायित्व निभाना चाहिए|

A. शादी से पूर्व

शादी का महत्त्व तथा उसकी प्रेरणा :

1. जब एक मनुष्य शादी कर लेता है तो वह अपना आधा ईमान प्राप्त कर लेता है| उस मनुष्य को अपने शेष ईमान के विषय में अल्लाह से डरता रहना चाहिए| **(सही उल जामे : 6148)**
2. शादी मेरी सुन्नत है, मेरी सुन्नत से जो व्यक्ति इनकार करेगा, उसका मुझसे कोई सम्बन्ध नही| **(सही उल जामे : 6807)**
3. शादी द्वारा कंगाली तथा ग़रीबी का अंत होगी| **(सूरा नूर : 32)**
4. शादी द्वारा सुख शान्ति| **(सूरा रूम:21)**
5. शादी पूर्व इश्वरदूत (पैग़म्बर) का विधान (सुन्नत) है| **(सूरा राद:38)**

6. शादी मुहम्मद ﷺ की सुन्नत (विधान) है| **(सहीह उल जामे:6807)**
7. शादी आधा धर्म (दीन) है| **(सहीह उल जामे:430)**
8. शर्मिन्दगी, बदनामी से बचने के उद्देश से शादी करने वाले को अल्लाह की मदद प्राप्त होती है| **(तिर्मिजी:1655, सहीह)**
9. शादी प्रेम प्राप्त करने का उत्तम साधन है| **(इब्ने माजह:1847, सहीह)**
10. सुशील पत्नी दुनिया की उत्तम वर है| **(मुस्लिम:1467)**
11. सुशील पत्नी पाने वाला मनुष्य भाग्यवान है| **(सहीह तर्घीब:1914)**

शादी के विवेकताये :

1. इस्लामी शादी में मानवता तथा अमानवता का भेद|
2. उत्तरदायित्व का अनुभव|
3. गंभीर व्याधि तथा रोग से सुरक्षित समाज|
4. सुशीलता|
5. स्वाभाविक सुख|
6. वंश की रक्षा|
7. मानव जाती वंश की सुरक्षा|
8. वंश की वृध्धि|
9. जिम्मेदारी तथा उत्तरदायित्व का अनुभव|

10. पति पत्नी में प्रेम तथा मुहब्बत|
11. दया तथा करुणा|
12. पति पत्नी एक दूसरे के लिए वस्त्र है| **(सूरा बखरह:187)**
    अर्थात, एक दूसरे के दोश को गुप्त रखते है, एक दूसरे के खूबसूरती का साधन है|
13. प्रलय के दिन वंश की वृध्धि पर नबी ﷺ का संतोष|
14. धर्म (इस्लाम) की वृध्धि|
15. ब्रम्हचर्यता से छुटकारा|
16. सुन्नत (नबी ﷺ का तरीखा) का पालन|